पुस्तक समीक्षा

भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा
7(1) 199–200, 2020
© 2020 Indian Sociological Society
Reprints and permissions:
in.sagepub.com/journals-permissions-india
DOI: 10.1177/2349139620923941
http://bss.sagepub.in

जॉन स्ट्रैटन हॉले, क्रिश्चियन ली नोवत्ज़के और स्वप्न शर्मा (सं), 2019, *भक्ति एंड पॉवर: डिबेटिंग इंडियाज रिलीजन ऑफ द हार्ट*, हैदराबाद: ओरिएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ xi + 255, मूल्य रु 875, आई.एस.बी.एन. 978-93-5287-621-1

भक्ति का अर्थ है, कई लोगों के लिए कई चीजें: यह निजी और सार्वजनिक, व्यक्तिगत और राजनीतिक, मननशील और संगीतमय है। अक्सर यह महिलाओं और उत्पीड़ितों की सीमित आवाज में बोलता है, फिर भी इसने अन्याय को खत्म करने में भूमिका निभाई है। फिर, भक्ति की शक्ति क्या है? और यह अपने स्वयं के अलावा अन्य शक्ति के रूपों के साथ कैसे प्रभाव डालता है?

भक्ति और शक्ति छठी शताब्दी से वर्तमान तक इन मुद्दों में एक सुलभ प्रवेश प्रदान करता है, स्वर और शब्दचित्रप्रस्तुत करता है। यह कई सवाल पूछता है। क्या भक्ति निम्न-वर्ग, मध्य-वर्ग या शासक-वर्ग है? क्या यह शक्ति आंतरिक रूप से संगीत और कला से जुड़ी है? क्या यह पृथ्वी और पारिस्थितिकी को संबोधित करती है, या हिंदुओं, मुसलमानों और जैनियों के बीच विभाजन की मध्यस्थता करती है? क्या भक्ति का कोई लिंग है, और यदि हाँ, तो कैसे? पुस्तक की समीक्षा करने के अंतर्गत इन सवालों के जवाब की तलाश की गयी है।

भारतीय भाषा में भक्ति केवल व्यक्तिगत भक्ति नहीं है, बल्कि सार्वजनिक भागीदारी का एक कार्य है, यहाँ तक कि कुछ मामलों में एक 'आंदोलन' है— प्रश्नवाचक के साथ-साथ सकारात्मक तरीके से शक्ति के व्याख्यान में गहराई से लागू किया गया है। समझाने के लिए, इस खंड के अध्याय तीन भागों में विभाजित हैं— 'परिस्थिति, 'मध्यस्थता', और 'एकजुटता'— हालाँकि इस तरह के लेबल की तुलना में प्रतिकूल प्रवृत्ति कहीं अधिक जटिल है। 'परिस्थिति' खंड, जमीन से ऊपर उठकर आगे बढ़ने के प्रयास से शुरू होता है: भक्ति कैसे ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से कई विशिष्ट समायोजन में शक्ति के संबंध में मौजूद है? तत्पश्चात यह 'मध्यस्थता' की ओर बढ़ता है, जहाँ यह क्रॉस-कटिंग भूमिकाओं पर प्रकाश डालता है, जिसमें भक्ति ने अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों में भूमिका निभाई है, साथ ही केंद्रीय प्रश्न पर विचार किया है कि क्या कुछ आवश्यक अर्थों में भक्ति संबंध के बारे में है— यही मध्यस्थता है। अंत में, खंड 'एकजुटता' की ओर बढ़ता है , जिसके विभिन्न प्रकार के उदाहरण हैं, जिसमें भक्ति ने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक गोंद के रूप में काम किया है— या इस काम को करने के लिए परिकल्पित किया।

प्रत्येक अध्याय अपनी खुद की एक दुनिया बनाने की ओर इशारा करता है, लेकिन प्रत्येक बड़ी पहेली का एक भाग बन जाता है। संपादक विषयगत भेदों को पाठक को खोज करने में सहायक के

रूप में पेश करते हैं, हालाँकि अध्याय को एक विशिष्टक्रम में नहीं पढ़ा जाना है। अंततः प्रत्येक निबंध अकेले ही खड़ा होता है जिस तरह से वह संपादकों के साझा प्रश्नों को संबोधित करता है। अधिकांश अध्याय एक पाठ या लिखित भक्ति संग्रह के साथ संलग्न हैं— एक अभिलेख जिसमें इस खंड के अध्याय योगदान करते हैं। अभिलेखागार इतिहास की दुर्घटनाएं नहीं हैं। वे विमर्शी, शक्तिशाली बलों द्वारा बनाए जाते हैं, और अक्सर इन बलों ने वर्ग , जाति, लिंग और भाषा के आधार पर दूसरों को बाहर रखा है। इस तरह, ऐतिहासिक रूप से, भक्ति को स्रोत पर संग्रहकर्ता की इच्छाओं या संग्रह के प्रायोजक द्वारा संपादित किया गया है। ग्रेव, ली, हैबरमैन, किनी, और पिंच नृवंशविज्ञान का उपयोग करते हैं; ग्रेव प्रदर्शनकला की; किनी और पिंच, वास्तुकला; ग्रैनॉफ और हॉले, दृश्य संस्कृति; और डेविस और यहाँ तक कि अमेरिकी कक्षाओं में विकसित सिलेबी द्वारा प्रदान किया गया रिकॉर्ड भी इस खंड के संपादकों को पाठ-शास्त्री के रूप में देखा जाता है जिन्होंने गैर-पाठआधारित अध्ययन किया है। यह देखा जा सकता है कि केवल जाति, लिंग, भाषा और क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि भाँति-भाँति की सामग्रियों का भी प्रतिनिधित्व करता है। भक्ति मानव अभिव्यक्ति के वर्ण क्रम पर काफी काम कर रही है।

शक्ति और भक्ति का क्या संबंध है? इस पुस्तक के अध्याय कोई निश्चित उत्तर नहीं देते हैं। लेकिन निहितार्थ, कम से कम, वे एक सामान्य पुष्टि करते हैं। वे इस तथ्य की गवाही देते हैं कि सदियों से भक्ति के विचार में ग्रंथों, कविताओं, प्रदर्शनों, राजनीति को उत्पन्न करने की शक्ति थी। पुस्तक में अध्याय यह समझने की कोशिश करते हैं कि जैक हॉले ने भारत को "रिलिजन ऑफ़ द हार्ट" क्यूँ कहा है। फिर भी दो महान प्रश्न बने हुए हैं, चाहे कॉर्पोरेट या व्यक्तिगत स्तर पर, और ऐसा लगता है कि वे बने रहेंगे। पहला, क्या धर्म के सच्चे क्षेत्र की ऐसी दृष्टि सभी से संबंधित है? क्या प्रत्येक के पास ऐसा हृदय है? और दूसरा, यदि ऐसा है, तो कोई भी उस हृदय को टूटने से कैसे बचा सकता है? भक्ति ने किस हद तक घृणा, अन्याय और मानवीय आवश्यकता का प्रतिकार किया है? जैसा कि भक्ति की वैश्विक परिदृश्य में उपस्थिति बढ़ती जा रही है, ये ऐसे सवाल हैं जो दक्षिण एशिया से बहुत दूर हैं।

यह भक्ति और भक्ति अध्ययन, दक्षिण एशियाई भक्तिवाद और दक्षिण एशियाई धर्मों और तुलनात्मक धर्मों के बारे में ऐतिहासिक मुद्दों में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है, जो भक्ति के हमारे सिद्धांतों पर पुनर्विचार करने के लिए निहित है। यह संग्रह, भक्ति के इस सम्मानित अध्ययन के लिए एक बहुत ही सोचा-समझा योगदान है। पाठक विशिष्ट और विविध स्थितियों में भक्ति और शक्ति के बारे में सोचने के लिए नए संसाधनों और व्यापक तथा सामान्य शब्दों के साथ आएँगे। इतिहासकारों, समाजशास्त्रियों, धर्मवादियों, और साहित्य, राजनीति और कला के छात्रों के लिए भक्ति अध्ययन पर एक स्रोत साहित्य के रूप में यह खंड उपयोगी होगा।

जे.पी.भट्ट
सह आचार्य
समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग
हे.न.ब.ग.वि.वि., श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड
ई-मेल: jphnbgu@gmail.com